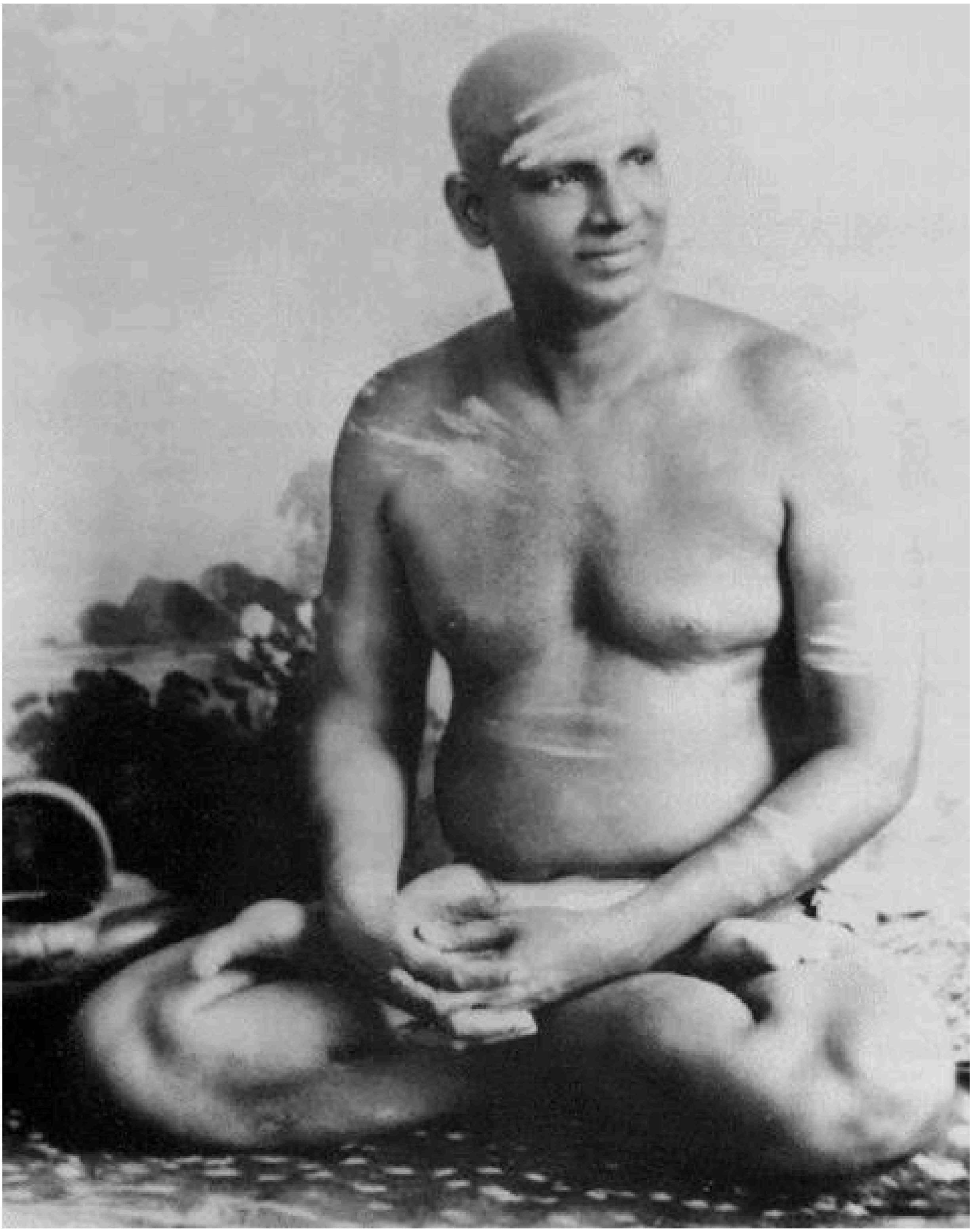
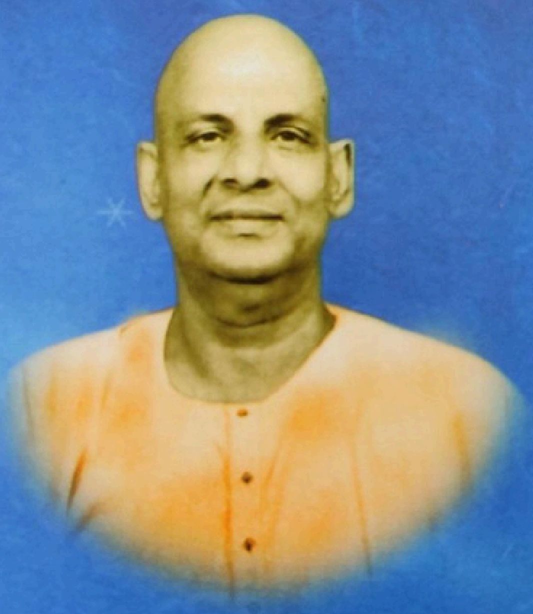


कर्म और रोग



श्री स्वामी शिवानन्द

कर्म और रोग

लेखक

श्री स्वार्ी शिवानन्द सरस्वती

MEDITATE SERVE LOVE THE D DIVINE LIFE SOCIETY

अनुवाशिका

शिवानन्द राशिका शिौक

प्रकिाक

ि शिवाइन लाइफ सोसायटी

पत्रालय : शिवानन्दनगर-२४९ १९२

शिला: शटहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड (शहर्ालय), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथर् शहन्दी संस्करण : २००४

शितीय शहन्दी संस्करण : २००७

तृतीय शहन्दी संस्करण : २०११

चतुथम शहन्दी संस्करण :
२०१५ पञ्चर् शहन्दी संस्करण :
२०१९
(१,००० प्रशतयााँ)

HS104

PRICE: 25/-

'ि शिवाइन लाइफ सोसायटी, शिवानन्दनगर' के शलए
स्वार्ी पद्मनाभानन्द िारा प्रकाशित तथा उन्ीं ंके िारा 'योग-वेिान्त
फारेस्ट एकेिेर्ी प्रेस, पो. शिवानन्दनगर, शि. शटहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, शपन २४९ १९२' र्ें र्ुशित ।
ForonlineordersandCataloguevisit : dlsbooks.org

प्रकािकीय

कर्म तथा उनके प्रशतफलों ंका शवसृ्तत शववरण इसर्ें शिया गया है। इसके िारा शववेकी र्नोशवज्ञान और अन्तदमशि वाला र्नुष्य एक वास्तशवक उदे्देश्य को अपनाने हेतु प्रेररत होता है। िब तक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं ं होता, ईश्वर का ज्ञान प्राप्त नहीं ंहोता, प्रत्येक र्ानव िैव शगरता शफर पुनः उठता और पिुता तथा र्ानवीयता के

र्ध्य झूलूता रहता है। शिन रोगों ंसे हर् पीशित हैं और हरें् इस पृथ्वी पर िो िन्म शर्ला है, वह हर्ारे पूवमिन्म के कर्ों के पररणार् हैं तथा कोई भी कर्म शबना उसके अनुरूप प्रशतफल के नहीं ंिाता। बुरा कर्म उसे करने वाले के ऊपर अपना प्रभाव िालता है। यहााँ पर िीवन को शनम्न गतम रें् ले िाने वाली कुछ पररस्थथशतयााँ िी गयी हैं, शिनरें् र्नुष्य असाविानीपूवमक शकये गये अपने कर्ों के फलस्वरूप रहने को शवविहोता है। पापी या पाप करने वाले के ऊपर िी कि आते हैं, वे इसरें् उ्िृत हैं। वे ऐसे लोकों ंरें् वास्तशवक िन्म के िारा या िो यहााँ उ्िृत हैं ऐसे कि के सर्तुल्य कि का अनुभव शकसी अन्य अस्स्तत्व के क्षेत्र रें् या पृथ्वी पर ऐसी बािाओं ंके साथ िन्म लेते हैं िहााँ शक ऐसे किों ंको या तो प्रत्यक्ष या अन्य के र्ाध्यर् से भोगते हैं।

-द डिवाइन लाइफ सोसायटी

सन् १९३२ रें् स्वार्ी शिवानन्द िी ने शिवानन्द आश्रर् के कायों का श्रीगणेि शकया। सन् १९३६ रें् शिव्य िीवन संघ की थथापना हुई। सन् १९४८ रें् योग-वेिान्त फारेस्ट एकेिेर्ी के कायमक्रर् प्रारम्भ शकये गये। इन सबका उद्देश्य था- आध्यास्त्मक ज्ञान का प्रचार करना तथा व्यस्ियों ंको योग और वेिान्त रें् प्रशिक्षण िेना । सन् १९५० रें् स्वार्ी िी ने भारत तथा सीलोन की यात्रा की । सन् १९५३ रें् स्वार्ी िी ने 'शवश्व िर्म संसि' का संयोिन शकया। स्वार्ी िी ३०० से अशिक पुस्तकों ंके लेखक हैं। संसार-भर रें् उनके शिष्य हैं-शिनरें् सभी िर्ों ंके शनवासी तथा सभी िर्ों और र्तों ंके अनुयायी सस्र्शलत हैं। स्वार्ी िी की पुस्तकों ंका अध्ययन करना परर् प्रज्ञार्ृत का पान करने के सर्ान है। १४ िुलाई १९६३ को स्वार्ी िी र्हासर्ाशि रें् लीन हुए।

कर्म और रोग

कर्म और उनके फलस्वरूप होने वाले रोग

प्रस्तावना

वतमर्ान सर्य र्ें यह सार्ान्यतः यह कहते हुए सुना ि◌ाता है शक पुराण अत्ंयंत अशवश्वसनीय ग्ंरंथ हैं उनर्ें बहुत सी बातो के बारे र्ें अशतियोस्ियााँ की गई हैं। ये आलोचक कहते हैं शक पुराणों ◌ें पाठकों ◌ंको ि◌राने के शलये बहुत अशतरंनिायें और शनरथमक बचकाने प्रयास स्वगमलोक के सुख ऐश्वयम तथा नरक की अस्तत के भयंकर शचत्रों ◌ंऔर वहााँ पर ि◌ी ि◌ाने वाली यातनाओं ◌ंके वणमन के आिंबरपूणम शववरण ि◌ारा शकये गये हैं। शकसी शवषय की आलोचना करने के शलये बहुत थिोीिी बुस्ि की आवश्यकता होती है। शवषय की गंभीरता को सोचे शवचारे शबना सिी शनंिा करना र्ानव बुस्ि का ि◌न्मिात स्वभाव है। शंकंतु इन पूवामग्रहों ◌ंके सर्तुल्य यशि थिोिा ध्यानपूवमक शवचार शकया ि◌ाये तो पुराणों ◌ंके ऋशषयों ◌ंने इन बातों ◌ंको शिस रूप र्ें शलखा है उसका कोई शवशिि उद्देश्य था इस बात

का रहस्योद्घाटन उन्होंनें शविेष र्दशिकोण से कुछ शवषयों ंको शविेष र्हत्त्व प्रिान कर उन पर शविेष िबाव िाला है। कर्म तथा उनके प्रशतफलों ंका शवसूतृत शववरण इस लेख र्ें शकया गया है। इस लेख के िारा शववेकी र्नोशवज्ञान और अंतरर्दशि वाला र्नुष्य एक वास्तशवक उद्देश्य को अपनाने हेतु प्रेररत होता है।

बि तक शक आत्म-साक्षात्कार प्राप्त नहीं ंहोता ईश्वर का ज्ञान नहीं ंप्राप्त होता प्रत्येक र्ानव सिैव शगरता शफर पुनः उठता और पिुता और र्ानवीयता के र्ध्य झूलूता रहता है। िीव िब तक अंशतर् रूप से ईश्वर से नहीं ं शर्लता पाशवकता पूणमतया सर्ाप्त या उस पर पूणम शविय नहीं ंपाई िा सकती। िहााँ तक र्ानव है साथ ही साथ उसके पिु भी हैं। कभी एक ऊपर होता है कभी िूसरा । केवल तभी िब िीवात्मा ऊपर होगा और इन िोनों ंसे परे उसकी प्रकृशत के तीसरे शनसि्यि स्वरूप शिसे शिव्य स्वरूप कहते हैं उसर्ें रूपांतररत और थथाशपत हो िायेगा, तब वह र्ूग नर अतीत बन िायेगा। शफर आगे से भशवष्य र्ें िीव चेतना के क्षेत्र र्े पिुता और र्ानवीय प्रकृशत के र्ध्य वरीयता हेतु हार िीत का यिु कभी नहीं ंहोगा। अब शिव्य क्षेत्र का स्वयं क्षेत्र के ऊपर आशिपत्य होगा।

बि तक यह स्थथशत प्राप्त नहीं ंहोती र्नुष्य अपनी वृशत्तयों ंके अनुरूप पिु या र्ानव र्ें पररशणत होता रहता है। वह स्वयं को बारी-बारी से श्रेष्ठ और शनम्न प्रिशिमत करता रहता है । वह उत्कषम और अपकषम के र्ध्य झूलूता रहता है। उसके िो शवशभन्न स्वरूप बाह्य प्रशतशक्रयाओं ंको अपनी शविशि रीशत से प्रभाशवत करते हैं । इसी प्रकार सर्ान रूप से बाह्य अशभगर् की शविेष प्रशक्रया ही िोनों ंउपरिी रूपों ंकी वाांशछत प्रशतशक्रया र्ानवीय चेतना र्ें िगाने र्ें सक्षर् होती है। इसीशलये हर् पाते हैं शक िो स्वयं संयर् से रहते हैं और सत्त्व, संस्कार, संसूकृशत और चररत्र का अशिक र्ात्रा र्ें अििमन करते हैं उन पर अपररषूकृत आवेग और वासनायें अपना प्रभाव नहीं ंिाल पाटी । वे र्ात्र कुछ आपशत्तिनक पररस्थथशतयों ंर्ें ही शवकशसत होती हैं िब शक र्नुष्य पूवम कुसंस्कारों ंके िागने के कारण िुभामग्य से कर्िोर पि िाता है। िब भी अपररषूकृत प्रकृशत र्ें ये वासनायें तत्काल शवध्वंस और शवपरीत कायम करतीं ंहैं अच्छे संस्कार उसी क्षण िढ़ि प्रकृशत पर प्रभाव िालते हैं शकंतु घोर पाशश्वक र्नुष्य पर वे अपना प्रभाव िालने र्ें असफल रहते हैं। र्राठी भाषा र्ें इसके शलये कहा गया है "शबना छड़ी के बंिर नहीं ंनाचेगा।" यही बात अच्छी भावनाओं ंके शलये भी है। रुगबी के प्रशसि िा. आरनाल्ड ने अपने लिकों ंर्ें शवश्वसनीय सहि वृशत्त के शवस्तार हेतु यह र्नोशवज्ञान साविानीपूवमक प्रयिु शकया । र्ाकम एन्टोनी ने अपनी उत्तेिक और शवश्वसनीय वाकपटुता का कुिलता पूवमक प्रयोग कर अपने रोर्न श्रोताओं ंके र्ानवीय पक्ष पर सूक्ष्मता से प्रभाव िालकर उनकी संविेनाओं ंको िगाया औरशफर उनके िसर्ािाली और पाशवक र्नोशवकार क्रोि को, उनके भीतर क्रोि के प्रशत प्रशतकार तथा उग्रता का उन्मिा पैिा कर सर्ाप्त शकया।

पौराशणक शहंिू िर्म के नकम और प्रशतफलात्मक शवचारों ंका आिार गहरी र्ानवीय अंतरर्दशि और प्रिंसा के योग्य भीतर तक प्रविे करने वाला र्नोशवज्ञान है। वे िानते हैं र्िुर सीटी की आविा उस बैल को हटने के शलये शववि नहीं ंकर सकती िो कीि़ की र्ार चाहता है। हर् िानते हैं शक लंका के पुल को बनाने की पूवम संध्या पर िब सर्िु नरे से उशचत व्यवहार हेतु सर्स्त प्राथमनायें शवफल हो गईं तो रार् भगवान् ने क्रोि र्ें बाण शलया । अगले ही क्षण सर्िु नरे भगवान रार् के सर्क्ष हाथ िोि कर शवनती करने लगे। इसी प्रकार श्रेष्ठ कायों के शलये, उच्च र्हत्त्वाकांक्षाओं ंऔर सच्चररत्र हेतु अंकिु लगाने के शलये पुराणों ंके ऋशषयों ंने उसके सर्क्ष उत्तर् िीवन के गुणगान, उसके अनकहे लाभ और अनुग्रह की प्रिंसा का स्पि शववरण प्रसुतुत शकया है। यहााँ उन्होंनें र्नुष्य के र्ानवीय पक्ष की सहायता का प्रयास शकया है। शकंतु िब वह बहुत अशिक घोर पापकर्ों र्ें और पाशश्वक शवषय भोगों ंर्ें शलप्त रहता है तब वे िानते थे शक यह शवषय को हल्का करने का अवसर नहीं ंहै। pi पिु को िंशित करनें के शलये उसके कर्ों के अवश्यंभावी, सत्य तथा तीव्र शववरण ही र्ात्र पयामप्त नहीं ंहोते । यहााँ हर्ें यह अवश्य ध्यान रखना चाशहये वे अशतश्योसि्या असत्य भाषण न करें बस्ल्क वे शवषय को सिीव शववरण के िारा र्ापकर उसे शविेष र्हत्त्व िें और उसे करने र्ें शकसी प्रकार के कि का अनुभव न करें। वे िीव को भयंकर पररणार्ों ंकी भयानक सेना के बारे र्ें बताते हैं िो शक पापी के बुरे कर्ों के कारण अवश्यंभावी है। वे नैशतक और आध्यास्त्मक

शनयर्ों ंके अशतक्रार्ी अनुिासन हीन लोगों ंकी राह िेखने वाली शवशभन्न यातनाओं ंका शवसूतृत शववरण िेते हैं। वे अशतक्रार्ी के पूवम कर्ों और उनके प्रशतफल िो उन्ोंनें पहले शकये हैं उनसे संबंि रखते हैं और इसकी सत्यता को प्रर्ाशणत करते हैं। पुराणों ंर्ें शनम्न कर्ों के पररणार् िो शक शनम्न गभों र्ें िीवन पयंत भोगे गये ऐसे भयंकर उिाहरण से भरे हुए हैं। िैसे नहुष, िय और शविय और गिेन्द्र आशि।

वे इसके साथ ही सर्ाप्त नहीं ंहोते । पाप कर्ों के अपररिों ंके फलों ंका दीर्ं िेना ही पयामप्त नहीं ंहोता इसशलये वे ऐसे घटनाक्रर्ों ंका उिरण भी िेते हैं िो तुलनात्मक रूप से अशहतकर कर्ों अच्छे भाव िैसे स्नेह, आशि र्ें र्न रखने से भी र्नुष्य के ऊपर गंभीर कि ले कर आते हैं। प्राचीनकाल र्ें ऋशष ि़ि भरत की कहानी र्ें यह चेतावनी एक उिाहरण के रूप र्ें है । असत्य भाषण की प्रतीशत र्ात्र भी चाहे अनिाने र्ें हुई हो तो भी भयंकर नरकाशि के एक क्षण के िििमन हेतु आत्मा को भेिने के शलये पयामप्त है। यहााँ र्हान् युशिशष्ठर िी का नरक िििमन का उिाहरण शिया गया है। वृहत िनसर्ूह के िारा वतमर्ान सर्य र्ें असंख्य पुराणों ंर्ें से सौभाग्य या िुभामग्य से र्ात्र कुछ का ही अध्ययन शकया िाता है। शिन थोिे श्रिालु िनों ंने शिन पुराणों ंका अध्ययन या श्रवण शकया है उनर्ें र्ात्र िास्त्रीय िैव पुराण या शवष्णु पुराण हैं। सार्ान्यतया र्ात्र स्कंि, र्ारकण्डेय, शवष्णु या श्रीर्द्भागवत र्हापुराण का ही पररिीलन शकया िाता है। यह र्ात्र शवद्याथी या रूशढ़वािी ब्राह्मण वगम ही नहीं ं बस्ल्क वह सार्ान्य व्यस्ि भी है िो शक भीि-भाि़ से िूर रहता है वह भी इनका ही पररिीलन करता है।

इस प्रकार कर्म और कर्मफलों ंके उिाहरण का किोि़ा र्नुष्य र्ें रहने वाले शवषयी पिु हेतु र्िबूत नहीं ं है और इसके फलस्वरूप र्नुष्य इतना उपरिर्ी पहले कभी नहीं ंहुआ। शकंतु शसिांत चाहे शिव्य या ऐशहक हो सिा अटल है। िंि संशहता का अज्ञान होने से शकये गये अपराि के िंि से र्ुस्ि नहीं ंशर्ल सकती और न ही कर्म करने वाल र्ुि हो सकता है। िो चोरी करेगा वह िेल िायेगा। िो र्ारेगा वह फााँसी पर चढ़ेगा। इस प्रकार शिसने पाप शकया है उसे भोगना ही होगा।

यशि इस ब्रह्मांिीय शसिांत के अपररहायम क्रर् के सत्य को उसके सार्ने अनलंकृत रूप तथा शनशित रूपरेखा के साथ उसके सार्ने रखा िाये तो यह उसे िुगुमण छोिने तथा सिगुण अपनाने, अिर्म त्यागने और िर्म को अंगीकार करने हेतु थोिा सा तो प्रेररत करेगा ही। यही "कर्म और उनके प्रशतफलस्वरूप होने वाले रोग" इस छोटी सी पुस्तक का उद्देश्य है।

इसका उद्देश्य र्ुख्यतया परलोक र्ें शर्लने वाले प्रशतफलों ंके कारण िो कि इस पृथ्वी लोक र्ें उसे िारीररक और र्ानशसक रूप से शर्लते हैं उसके प्रशत उसर्ें शवश्वास िगाना है। आिुशनक र्नुष्य "िो उसे शिखाई िेता है उस पर शवश्वास करना" यही उसका लक्ष्य है और वह िर्म शवरुि कर्म करने के फलस्वरूप िंि के रूप र्ें अस्पतालों ंऔर कलीशनकों ंर्ें िो चुका रहा है उस पर एक क्षशणक दृशि भी नहीं ंिालना चाहता।

शिन रोगों ंसे हर् पीशित हैं और हर्ें इस पृथ्वी पर िो िन्म शर्ला है वह हर्ारे पूवम िन्म के कर्ों के पररणार् हैं तथा कोई भी कर्म शबना उसके अनुरूप प्रशतफल के नहीं ंिाता। बुरा कर्म उसे करने वाले के ऊपर अपना प्रभाव िालता है। यहााँ पर िीवन को शनम्न गतम र्ें ले िाने वाली कुछ पररस्थथतयााँ िी गई हैं। शिनर्ें र्नुष्य अपने असाविानी पूवमक शकये गये कायों के फलस्वरूप रहने को शवविा होता है।

िैसा शक आिुशनक प्रबुि र्नुष्य सार्ान्यतया शवश्वास करते हैं वैसी नकम कोई असत्य कल्पना नहीं ंहै। अनुभववािी र्ात्र अपनी इंशियों ंके स्पिम िारा होने वाले अनुभवों ंर्ें ही शवश्वास करते हैं और अपनी बुस्ि के िायरों ंसे परे िाने र्ें स्वयं को अयोग्य पाते हैं। इसका अथम यह नहीं ंहै शक उनकी सर्झ से परे िो सत्य है उन् अनिेखा करना चाशहये । हर्ें यह शनणय पूवमक कहने का कोई अशिकार नहीं ंहै शक यह पृथ्वी र्ात्र प्रत्यक्ष या स्थूल सत्य है और अन्य आभास र्ात्र है। क्योंशक हर् तारों ंको शटर्शटर्ाता हुआ प्रकाि का शबंिु िेख सकते हैं इसशलये

वे शटर्शटर्ाते हुए प्रकिा का शबंिु नहीं ंबन िायेंगे। यशि र्ैंने अर्ेररका नहीं ंिेखा है तो र्ुझे उस िेि के अस्स्तत्व को नकारने का कोई अशिकार नहीं ंहै। हर्ें यह स्वीकारने के शलये शक परलोकों ंका भी अस्स्तत्व है िो शक प्रकृशत और आकार र्ें आाँतररक रूप से शभन्न है अंतज्ञामन और तकमबुस्ि िोनों ंप्रकार के प्रर्ाण हैं। योगवाशिष्ठ कहता है शक हर्ारी र्दशि से परे स्थथत अन्य बृहत लोकों ंके र्ध्य हर्ारी पृथ्वी एक अणु के सर्ान है। हर्ें योगवाशिष्ठ के इस तथ्य को नकारने का कोई अशिकार नहीं ंहै शक वे लोक शवशभन्न पिाथों िैसे तााँबा, लोहा, सोने आशि से शनशर्मत तथा पानी और िूि से आपूररत है तथा वहााँ सपम, पिु िैत्य आशि शनवास करते हैं। यह कोई आवश्यक नहीं ंहै शक सर्स्त लोकों ंर्ें र्ात्र र्नुष्य प्राणी ही रहे और शिन लोकों ंका अस्स्तत्व है उनर्ें पृथ्वी िैसी स्थथशतयााँ ही अशभभावी हों।ं यह ब्रह्मांि अनंत ईश्वरीय चेतना का शवशभन्न अंिों ंका क्रशर्क प्राकट्य है िो िीवन और अनुभव के प्रत्येक प्रकार र्ें सस्म्शलत है। अनंत एक र्हान आियम है और हर् यह नहीं ंकह सकते शक इसके गभम र्ें कौनसी वस्तुएाँ पल रही हैं। अनंत र्ें कई पररवार हैं और पृथ्वी, नकम, स्वगम, र्नुष्य, पिु, िेवतागण सभी शभन्न-शभन्न प्रकृशत वाले इसकी संतान हैं। परर्ात्मा छोटे से पिाथम से परर्ानंि तक शवसृतृत है और उनके अस्स्तत्व के र्ध्य अनशगनत ब्रह्मांि अपनी अंतरशनशहत वस्तुओं ंके साथ स्थथत है। वे उनकी स्वयं की प्रकृशत और उनकी अंतरशनशहत वस्तुओं ं िोनों ंर्ें शभन्न है। ऐसा कहा िाता है शक प्राणी इस या अन्य शकसी भी लोकों ंर्ें अपने कर्ों के अनुसार िन्मता है। अशि ही र्ात्र उष्णता प्रिान करती है और र्ात्र भोिन ही क्षुिा को िांत करता है। इसी प्रकार शविेष कर्ों के फलों ंकी प्रास्प्त के शलये शविेष पररस्थथशतयााँ और वातावरण आवश्यक होता है।

शकसी शिव्य श्रेष्ठ प्राणी के क्रोि के कारण िण्ड या शवपशत्त अशनवायम नहीं ंहै, यह प्रकृशत के शनशित शनयर् के अनुसार शक आत्मा अपने पूवम िन्म र्ें शकये गये कर्ों के कारण िो अनुभव शनशित शकये गये हैं उनके शलये उपयुि िरीर र्ें स्वयं को प्रगट करती है उनके िारा शनिय ही वे िुःख या शवपशत्त अशनवायम होती है। इसी प्रकार लोकों ंकी प्रकृशत र्ें शभन्नता वास्तशवक है यह शनर्ूमल नहीं ंहै। हर्ें याि रखना चाशहये शक सत्य अनिेखा होता है।

नकम, इन्द्रलोक या हर्ारी पृथ्वी की ही भााँशत वास्तशवक लोक है। ये लोक उनके आशवभामव की सूक्ष्मता र्ें शभन्न होते हैं। वे चेतना की स्थथशत िो उनके िारा प्रिशिमत की गई है उसर्ें अंततः शभन्न होते हैं। पापी या पाप करने वाले के ऊपर िो िुःख आते हैं यहााँ नीचे र्ृत्यु होती हैं वे ऐसे लोकों ंर्ें वास्तशवक िन्म के िारा या िो यहााँ र्ृत्यु होती हैं ऐसे िुःख के सर्तुल्य िुःख का अनुभव शकसी अन्य अस्स्तत्व के क्षेत्र र्ें या पृथ्वी पर ऐसी बािाओं ंके साथ िन्म लेते हैं शक ऐसे िुःखों ंको या तो प्रत्यक्ष या अन्य के र्ाध्यर् से भोगते हैं।

कर्म और उनके फलस्वरूप होने वाले रोग

कर्म	रोग
ी अन्यों ंका अपर्ान करता है, वचन तिो़ता है, ूसिरों ंको शनरिा करता है, शकसी को उसकी संपशत्त से अपवंशचत करता है।	घोर र्ानशसक यंत्रणा भोगता है।
ी चूहे या सपम के शबल का र्ुँह बंि कर िेता है। िो र्छली को पक़िता है और उसके िर् घुटने का कारण होता है या शकसी प्राणी की गला िबाकर हत्या करता है।	अथथर्ा, फेफ़िों ंके रोग, फुसफुसावरणि़ोथ उरोग्रह श्वसनिोथ (गंभीर) नूयूर्ोशनया आशि से पीशित होता है।
ी अन्यों ंको शवष बुझे औिारों ंसे घायल करता अथवा हत्या करता है।	शबच्छू िंि और सपमिंि से पीशित होता है।
ी अन्य पर अत्याचार करता है और उन्	अत्यशिक हाथी पाँव रोग होता है।
भि तथा अहंकार कारण थथाई रूप से िास बनाकर रखता है।	
ी कृपण और िर्िीर होता है, िो शवध्वंस करता है,	क्षय रोग से पीश़िता होता है।
ी अपने ऋण लेने वाले लोगों ंको कंगाल कर िेता है और अशिक ब्याि लेकर भुखर्री की स्थथशत र्ें ला िेता है।	
ी वैश्याओं ंर्ें आसि रहता है, शर्लावट करता है और अपशवत्र िीवन शबताता है।	उसे कुष्ठ रोग होता है।
शिसे अपने िारीररक बल का अशभर्ान होता है और	शर्गी रोग से पीश़ित होता है।
ी अपनी िस्ि का िुरुपयोग अन्यों ंपर अत्याचार करने और अन्य से झग़िने र्ें करता है।	
ी स्स्त्रयों ंपर कारु्क दृशि िालता है, िो िूसरों ंकी संपशत्त पर दृशि िालता है, शिसका हृिय िूसरों ंकी सर्ृस्ि से िलता है, िो नाच सभा र्ें िाता है।	थथाई नेत्र रोग हो िाते हैं।
ी शकसी के घर को आग लगाता है और अन्यों ंकी रृ्तु्य का कारण होता है।	उसे शवसपम और गभम र्ें गर्म फफोले हो िाते हैं।
ी अन्यों ंको क्षत्रक, रस पुष्प तथा उत्तेिक शवष िेता,	उिर िूल और िठर िोथ ।
ी चावल र्ें चुना शर्लाता है, होटल र्ें कार् करता है, ीििू र्ें पानी शर्लाकर उसे िुि िूि के सर्ान उच्च रू्ल्य पर बेचता है।	

ीी पाखण्डी है तथा अच्छाई और सि्गुणों ंका ढोंगं उसे बुरी करके अन्यों ंको सिा निंृस कायों िारा यंत्रणा िेता है, ीी सिा िुव्यमवहार करता है।	खुिली और त्वचा रोग हो िाते हैं।
ीी गपिप र्ें लगे रहते हैं, िो परशनंाा और परीष कानों ं (अन्य का अपर्ान) करना पसंिकरते हैं, िो नाच के िाते ीी र्ें अश्लील गीत सुनते हैं।	र्ें िािम व आविों सुनाई िेती हैं, कानों ंर्ें घाव हो हैं और कान र्ें िलन होती है
पुत्र िो अपने शपता की अवज्ञा करते हैं और उनें िवल न्यायालय र्ें खींचं कर ले िाते हैं। शवशिवा और वकील िो न्याया लय र्ें सत्य को उनें रंगही	रोग तथा र्दशिहीनता हो िाती है। नता (र्दाशिोष), भेंगापन, र्ोशतयाशबंऔर
शवकृत िरीर के साथ िन्मते और स्मरणिस्र्ें कुरी से पीशित रहते हैं। घुर्ाते और असत्य भाषण करते हैं।	
वे वैज्ञाशनक िो शवनािकारी अशिबर् का आशवष्कार वे करते र्ें तथा न्य लेते हैं उन्र्ें भोले भाले लोगों र्ें परहेशाराते हैं। और िब वह पिे कटते हैं और लक़िी िलाने के कार् आती है। वे कई िन्मों ंतक कूरूरता पूवमक राख र्ें पररवशतमत होते हैं।	असंख्य असाध्य रोगों ंसे पीशित होते हैं, कि़ी के
शनिमयी शचशकत्सक िो अपने रोशगयों ंकी शचशकत्सा ठीक से नहीं ंकरते, शनरथमक हैंगी िवाइयाँ िेते हैं, पानी का ईंक्शिन लगाते हैं और बहुत अशिक फीस और लेते हैं।	वे स्त्री के रूप र्ें िन्मते और उनें गभामिय के रोग रहते हैं। उनकी गभम िारण और प्रसव र्ें सिा कि गहन िशटलतायें होती हैं और इसका पररणार् अशिकतर गभमपात होता है।
संन्यासी िो शसि का विे बनकार सांसाररक लोगों ंको छलते हैं और िब भी वे सुखोपभोग की बहुत अशिक रखते हैं	वे अपनी युवावथथा के प्रारंभ र्ें िस्हीनता से शविय वे भयंकर हतािा से शघर िाते हैं।
ीी र्द्यपान करते हैं और अनैशतक कायों र्ें लगे रहते हैंऔर तंशत्रकावसिा और सार्ान्य ििता से पीशित रहते हैं।	वे सर्य से पूवम क्षीणकाय तथा अल्पशवकशसत िन्मते हैं
ीी अपने भोिन पानी के शलये र्ूक प्राशणयों ंका हरण करते और भोले-भाले गाय बैलों ंको पीटते हैं। ीी लोगों ंको बंिीगृह र्ें यंत्रणा िेते हैं।	उनें पायररया हो िाता है, सारे िाँत शगर िाते हैं और उनके गले र्ें व्रण हो िाता हैं। वे शवकलांग और लकवे से पीशित िन्मते हैं और
	असाध्य नि़ाी ििम और गशठया से पीशित रहते हैं।
ीी ईश्वर की शनंाा करते हैं, िो संतों ंऔर िास्त्रों ंके बारे र्ें अशि सम्भाषण करते हैं।	उनें िीभ का कैंसर हो िाता है और वे गूँगे बनते हैं।

वे ि◌कैत ि◌ो लोगों ◌ंकी वसुतुओं ◌ंका हरण करते और शनिमन लोगों ◌ंको गोली ऱ्ार ि◌ते हैं।	वे प्रत्येक हा़र्ऱारी से पीशि़त होते तथा प्रत्येक सर्य उनरे़् बार-बार आवृशत्त और ि◌शटलतायें पै़ा होती हैं।
ी ी़शि अपने यज्ञोपवीत को शनकाल के फेंक ि◌ता है, उसे चोटी नहीं ◌ंरखता, संध्या वंनिा नहीं ◌ंनहीं ◌ंकरता ।	करऱ्ोरी रहती है और और पागलपन के ि◌ौरे पड़ते हैं।
ी ि◌नी व्यस्ि अपने कारखानों ◌ंरे़् श्रशकों ◌ंसे अथथऱ्ा बिावपूणम बहुत अशिक कार्् करवाते हैं और उन्ि◌ूरी बहुत कऱ्् ि◌ते हैं अुशि। तथा अशिक तकान और केर्े हैं झुकने से भी पीशि़त होता है। असाध्य प्रवाशहका और अीौणम तथा रि की करी़्	स्र्तषक रे़् अत्यशिक घुटन और अबुमि और होता है शिसरे़् असहनीय ि◌ि◌म होता है तथा वह गशठया,
ि◌िन्नकुटी सं्बंधी ◌ंि◌ि◌ उन लोगों ◌ंको ठगता है। और कुपोषण के साथ प्लीहा के रोग	
ी बासी सस्ि़यों ◌ंऔर फलों,◌ं स़ि़े हुए गेहाँ और चावल को तिो ि◌ैसा बनकार उच्च रू़ूल्य पर बेचता है। रु़ुनाफाखोर और कालाबाि़ारी करने वाले ।	वह बालों ◌ंके शगरने, सफे़ ि◌ाग, ि◌ाँत रे़् गढ्ढे और ऱ्ोशतया शबंि़ से पीशि़त रहता है।
	उनको असाध्य रोग हाथी पाँव और आऱ्ि़य रे़् अबुमि होता है। उनको शसर और कंि़◌े ि◌ि◌पर व्रण, आंतररक व्रण और पीठ पर एस्ि़्ा आशि हो ि◌ाता है।
चुगलखोर शवश्वासघाती ि◌न ।	
अशिकारी ि◌ो अपने अीौनथथ कर्मचाररयों,◌ं शलशपक तथा चपराशसयों ◌ंको अनाशिकृत कायम शनकालकर उन्् अनावश्यक रूप से परीेशान करते हैं।	उन्् असाध्य और असहनीय शसर ि◌ि◌म, उच्च रिचाप तथा तथा तीव्र चक्कर आता है।
वे अशिकारी ि◌ो ि◌नता के ि◌न का ि◌ुरुपयोग करते हैं और झूठ़ी सूची बनाकर प्रसुतुत करते हैं।	वे ि◌िलोर और शवषिा ज्वर से पीशि़त होते हैं।

कर्म और िन्म

ब्राह्मण की हत्या करने वाला क्षय रोगी की तरह िन्मता है। गाय की हत्या करने वाला कूब्रि यिु और रूढ़ बुस्हिोता है। कुआँरी, कुआँरा या सती को र्ारने वाला कोढ़ी होता है।

स्त्री को र्ारने वाला और भ्रूण को नि करने वाला ऐसा िंगली बनता है शिसे बहुत से रोग होते हैं। िो अिर्म से सहवास करता है वह शिंहिा बनता है िो गुरु पत्नी के साथ संबंरिखता है वह रोगी त्वचा के साथ न्मिता है। नागाप्राह कर

ीि र्ाँस खाता है उसका रंग बहुत लाल होता है। र्द्य पीने वाले के िाँत बहुत गंिहोते हैं। वह ब्राह्मण िो लालच के कारण न खाने योग्य वस्तुुएँ खाता है वह ब्रिे पेट वाला िन्मता है।

ीि शिठाइयाँ अन्य को शिये शबना ग्रहण करता है वह अगले िन्म र्ें सूिे हुए गले वाला बनता है िो श्रिा कर्म र्ें अपशवत्र भिोन िेता है वह कोढ़ी के रूप र्ें िन्म लेता है।

वह र्नुष्य िो अहंकार के विीभूत होकर अपने गुरु का अपर्ान करता है अगले िन्म र्ें अपस्मार से पीशित होता है िो विेों ंऔर पशवत्र िर्मग्रंथों ंकी उपेक्षा करता है पीशलया यिु होता है। एकाकी शिक

ीि झूठी गवाही िेता है गूंगा बन िाता है िो साशथयों ंकी पंस्सिे अलग बैठकर भिोन करता है काना बन िाता है िो शववाह िीो को अलग करता है वह ओष्ठहीन होता है िो पुस्तकें चोरी करता है वह अंिा बनता है।

ीि गाय या ब्राह्मण को उसके पैर से ठोकर र्ारता है वह लंगिा या शवकलांग होता है िो असत्य वचन बोलता है वह हकलाता है। िो असत्य सुनता है वह बहरा होता है।

शवष िेने वाला शवशक्षप्त बनता है, गृह िाही गंिा होता है। िो र्ाँस शवक्रय करता है सबसे अभागा और ुभिामग्यिाली होता है। िो अन्य प्राशणयों ंका र्ाँस खाता हो वह रोगी होता है।

ीि आभूषण चुराता है वह शनम्न िाशत र्ें िन्म लेता है िो स्वणम चोरी करता है वह रोगी नाखूनों ंवाला होता है, िो अन्य िातु चुराता है वह अभाव ग्रस्त होता है।

िी भिोन चुराता है वह चूहा बनता है िो अन्न की चोरी करता है वह शटड्डी बनता है िो िल की चोरी करता है वह चातक पक्षी बनता है िो िहर चुराता है वह शबचूछू बनता है।

िी सस्ियााँ और पानी चुराता है वह र्ोर बनता है। िो इत्र चोरी करता है वह छबूंरि बनता है। िो िहि चुराता है वह गो र्शक्षका बनता है। िो र्ााँस चुराता है वह शगि बनता है। िो नर्क चुराता है वह चींटी बन िाता है।

िी बैलपत्र, फल और पुष्प चुराता है, िंगली बंिर बनता है। िो िूते, घास और रूई चुराता है वह भिेड़ के गभम से िन्म लेता है।

िी आतंक र्चाता है, िो राह के कारवााँ को लूटता है िो शिकार करता है वह कसाई के घर बकरी के रूप र्ें िन्मता है।

शिसकी र्ृत्यु शवषपान से होती है वह पहािों ंपर काला सपम बनता है शिसका स्वभाव असंयशर्त होता है वह शनिमन वन र्ें हाथी बनता है। िो िीि ईश्वर की अरािना नहीं ंकरता और वह सभी प्रकार के भोज्य पिाथों को शबना शहचशकचाहट और सोच-शवचार के खा लेता है वह शनिमन वन र्ें बाघ बनता है।

िी ब्राह्मण गायत्री िप नहीं ंकरता, िो संध्या काल र्ें ध्यान नहीं ंकरता िो बाहर से तो पशवत्र होता है और अंिर से िुःिररत्र है वह सारस बनता है।

िी किर्मकाण्ड नहीं ंकर सकते उनके शलये िो ब्राह्मण कर्मकाण्ड करता है वह गााँव का कुत्ता बन िाता है िी बहुत अशिक ऐसे कर्मकाण्ड करते हैं वे गिा बनते हैं। ईश्वर का स्मरण शकये शबना भिोन करने से कौआ बन िाते हैं।

िीि िो उसे ज्ञान प्राप्त करना चाशहये वह नहीं ंप्राप्त करता सांड बनता है। वह शिष्य िो गुरु की सेवा नहीं ंकरता पिु गिा या कौआ बनता है।

िी अपने गुरु को िर्काता या गुरु पर थूकता है वह शनिमल, िीि भूशर् र्ें र्हान भयंकर शपिाच बनता है।

िी िीि को अपने वचन के अनुरूप िान नहीं ंिेता वह शसयार बनता है िो अपने आशतथेय के साथ अच्छा व्यवहार नहीं ंकरता वह शचल्लाने वाला अशि र्ुख वाला िैत्य बन िाता है।

िी अपने शर्त्र को िोखा िेता है वह पहाड़ी शगि बन िाता है। िो शवक्रय करने र्ें बेईर्ानी करता है वह उल्लू बनता है। िो िाशत और िर्म वगम के बारे र्ें अिुभ बोलता है लकड़ी र्ें कबूतर बनता है।

िी आिायें नि करता है िो स्नेह नि करता है, वह िो नापसंि होने के कारण अपनी पत्नी को त्याग िेता है वह लम्बे सर्य के शलये लाल हंस बनता है।

िी र्ाता-शपता और गुरु से घृणा करता है िो बहनो और भाइयों ंसे लड़ाई करते हैं वो कर् से कर् एक हिार िन्मों ंतक गभम र्ें रहते हुए ही नि हो िाते हैं।

वह स्त्री ि ो अपने सास और ससुर का अपर्ान करती है और उनसे सिा झगिती है वह ि ूँ ू बन ि ाती है। वह ि ो अपने पशत को ि ाँटती है वह ि ुआ बनती है।

वह स्त्री ि ो अपने पशत को छोि़ती है और ि ूसरे पुरुष के साथ भाग ि ाती है वह उ़िने वाली लोर्ीि, शछपकली या स्त्री सपम बन ि ाती है।

वह ि ो अपनी वंि परम्परा को ति़ोकर अपने पररवार की स्त्री का आशलंगन करता है वह लक्किकग्घा और साही बन ि ाता है और भालू के गभम से उत्पन्न होता है।

ि ो कारु्क र्नुष्य ि ो शकसी संन्याशसनी के साथ ि ाता है वह र्रूथथल र्ें राक्षस बनता है ि ो अपररपक्व बाशलका के साथ र्ेलि-ि ोल रखता है वह लक्किी र्ें रहने वाला एक बहुत बि़ा सपम बनता है।

ि ो अपनी गुरु पत्नी के साथ र्ेलि-ि ोल रखता है वह शगरशगट बनता है वह ि ो रािा की पत्नी के साथ ि ाने का प्रयत्न करता है वह बहुत ि ुिरत्र बनता है ि ो अपने शर्त्र की पत्नी के साथ सम्बंि रखता है वह गिा बन ि ाता है।

वह ि ो अप्राकृशतक पापाचार करता है वह गााँव का सुअर बन ि ाता है ि ो बहुत क्रोिी होता है वह कारु्क घोि़ा बन ि ाता है।

ि ो र्ृतक के ग्यारहवें शिन अशपमत भोिन पिाथम ग्रहण करता है वह कुत्ते के रूप र्ें ि न्म लेता है ि ो ब्राह्मण भगवान के शलये शनशर्मत प्रसाि के ऊपर शनवामह करता है वह र्ुगी के गभम से ि न्म लेता है।

वह िशि अभागा है ि ो संपशत्त के शलये ि ेवताओं की पूिा करता है उसे कोई िााँशत नहीं शर्लती और वे गिली शचशि़या बन ि ाते हैं।

ि ो स्वयं ि ारा ि ान शकया या अन्य के ि ारा ि ान र्ें शिया भूशर् का टुकि़ा वापस ले लेता है वह शवष्ठा र्ें कीि़े के रूप र्ें ि न्म लेता है।

शनम्न योशन के सर्स्त प्राणी, वृक्ष और इसी प्रकार के सर्स्त ि ीव नकम से वापस आकर र्ानव साम्राज्य र्ें शनम्न और अछूत ि ाशत र्ें ि न्म लेते हैं और तब भी पाप के शचन्ह उनर्ें रहते हैं और वे बि़े अभागे होते हैं।

वे ऐसे स्त्री और पुरुष बनते हैं ि ो ररसने वाले कुष्ठ रोग, ि न्मािंि, ि ुःखि रोगों से पीशि़त तथा उनके ि रीर र्ें पापों के शचन्ह होते हैं।

वह ि ो रािा बनता है िशि को भूशर् ि ान नहीं करता, वह बहुत बार शभखारी के रूप र्ें ि न्म लेता है िहााँ उसके पास एक झोंपि़ी भी नहीं होती। ि ो रािा अहंकार के कारण भूशर् का ि ान नहीं करता वह ि ब तक सूयम और चंद्रर्ा का अस्स्तत्व होता है नकम र्ें शनवास करता है।

कर्म और नकम

बहुत से नकम हैं शिनर्ें िीव अपने पापों ंऔर र्नोभावों ंके कारण शकये हुए कर्ों के प्रशतफल के अनुरूप िाता है। भागवत र्ें ऐसे उनतीस प्रकार के नकम लोकों ंका वणमन है िहााँ िीव उनके कर्ों के कारण िन्म लेते

वहााँ एक नकम का नार् तशर्स्र है। िो व्यस्ि ूसरे की संपशत्त, पत्नी और बच्चों ंपर अशिकार कर लेते हैं वे इस नकम र्ें िन्म लेते हैं। िीव को वहााँ बहुत अशिक कि का अनुभव होता है। िीव को र्त्यम बंिनों ंसे बााँिकर अंिरे ेर्ें िी से फेंक शिया िाता है। उसे भोिन पानी नहीं ंशर्लता उसे िण्डों ंसे र्ारा िाता है और उसे िर्का कर रखते हैं और वेिना की स्थथशत र्ें ला िेते हैं िीव यहााँ रूस्च्छमत होकर शगर िाता है।

ूसरे नकम का नार् है अंितशर्स्र । इसर्ें उन्हें लाया िाता है िो अपनी पत्नी को िोखा िेते हैं और अन्य की संपशत्त को ठगते हैं। ऐसे िीव यहााँ यातना िेने हेतु लाये िाते हैं िहााँ अत्यशिक ििम के कारण अपनी सारी चतुराई और संवेिना भूल िाते हैं। िीव को एक ऐसे पेड़ की तरह कि होता है शिसकी ििें काट िी गई हों।ं

िि स्वयं को इस भौशतक िरीर के रूप र्ें पहचानते हैं और इस संसार की संपशत्त को अपनी सर्झते हैं वे रौरव नार् के नकम र्ें शगरते हैं। िो लोग पृथ्वी पर लोगों ंको सताते हैं उन्हें इस भयंकर नकम र्ें िहरीले कीड़े शिन्हें रूरू कहते हैं के िारा यंत्रणा िी िाती है।

र्हारौरव भी इस प्रकार का नकम है िो व्यस्ि कार्वासना र्ें अनुरि रहते हैं उन्हें यहााँ र्ााँसभक्षी प्राणी खाते हैं।

कुम्भपाक नकम र्ें ऐसे शनिमयी और क्रूर लोगों ंिो िीशवत प्राशणयों ंिैसे पशु और पशक्षयों ंऔर इसी प्रकार के प्राशणयों ंको खाते हैं। ऐसे लोगों ंको भयंकर राक्षस तेल र्ें उबालते हैं।

िि आध्यास्त्मक र्नुष्यों,ं ब्राह्मणों ंऔर शपतरों ंका अपर्ान करता है उन्हें इस नकम र्ें फेंका िाता है शिसे कालसूत्र कहते हैं। चालीस हिार र्ील शवस्तृत और शनरंतर नीचे से अशि से और ऊपर सूयम से गर्म हो रहे िलते हुए तााँबे की सतह पर उसे रखा िाता है और उसे भूखा प्यासा रखकर यंत्रणा िी िाती है और वहााँ न कहा िा सके इतनी अशिक उसकी िुगमशत होती है।

एक नकम है अशसपत्रवन यह वन तीक्ष्ण क्षुरों ंसे बनी पशत्तयों ंसे भरा हुआ है। इसर्ें िीव को ििौाया िाता है और उसे पशु की भााँशत पीटा िाता है िो वैशिक िर्म का पालन नहीं ंकरता और नास्स्तक िर्म को र्ानता है वह इस नकम र्ें भेिा िाता है वास्तव र्ें क्या ही ियनीय दृश्य है वह इिर उिर भागता है और उसके िरीर का प्रत्येक भाग लकड़ी की भयंकर तलवारों ंके िन्दर् के र्ध्य शपसता रहता है। िीव शचल्लाता है र्ैं र्र गया और घोर व्यथा र्ें नीचे शगर पड़ता है।

वह रािा िो भोले-भाले र्नुष्यों ंको िि ििेता है या िो ब्राह्मण को िारीररक िि ििेता है वह िुकर रुख नकम र्ें शगरता है। यहााँ उसके िरीर को प्रत्येक भाग गन्ने की तरह शनचोड़ा िाता है। वह ििम से चीखता है पर कोई उसकी सहायता नहीं ंकरता ।

िि र्नुष्य सर्ाि र्ें अच्छी स्थथशत र्ें रहते हैं और ूसरों ंको िुःख िेते हैं वे अंिकूप नकम र्ें शगरते हैं यहााँ िीव को अंिेरे र्ें शवशभन्न भयंकर पशुओं,ं सााँपों ंआशि िारा यातना िी िाती है और वह यह पाठ सीखता है शक अब ऐसे पाप पूणम कायम शफर नहीं ंकरेगा।

वे ब्राह्मण िो अपने शनत्य के यज्ञ नही करते िो उनके पास है उसे िूसरों ंर्् नहीं ंशवतररत करते वे कौआ कहलाने लायक हैं और वे ऐसे नकम र्् शगरते हैं िहााँ उनका भोिन किो़ रहते हैं। वे किो़ के बहुत बि़े सागर र्् फेंक शिये िाते हैं। िहााँ वे िीव को चारों ंओर से काटते रहते हैं।

िो ब्राह्मण या शनिमन व्यस्ि को लूटते हैं और इस प्रकार उन्् शबना कारण सताते हैं वे इस नकम र्् शगरते हैं िहााँ गर्म लोहे के शचर्टे चुभोयें िाते हैं और उन्् लाल गर्म गोलों ंसे िागा िाता है।

िो स्त्री पुरुष ऐसे शनिमन नौकरों ंऔर कुशलयों ंको शिनकी ियनीय स्थथशत के कारण उन पर िया या सहायता की िानी चाशहये से अपिब्द कहते हैं वे ऐसे नकम र्् शगरते हैं िहााँ उन्् खूब किो़ लगाये िाते हैं और उनको को भयंकर राक्षस तेल र्् उबालते हैंस्त्री या पुरुष की िलते हुए लोहे की प्रशतर्ा को आशलंगन करने हेतु बाध्य शकया िाता है। स्त्री या पुरुष िो अपनी शववाह शैय्या का िुरुपयोग करते हैं उन्् भी यही िण्ड शिया िाता है।

भावावेि र्् आकर सभी प्राशणयों ंके ऊपर क्रोि करते हैं वे सालर्ाली नकम र्् भेि िाते हैं िहााँ वे कााँटों ंपर िालकर पूरे िेि र्् घसीटे िाते हैं।

वह रािा िो न्यायोशचत सीर्ाओं ंका अशतक्रर्ण करता है, अशिकारीगण िो न्याय के शसिांत का उल्लंघन करते हैं वे र्रणोपरांत वैतरणी निी र्् शगरते हैं। यहााँ पर िीव िलचर शपिाचों ंिारा पीटे िाते हैं शकंतु वे अपने िरीर से अलग नहीं ंहोते बस्ल्क वे अपनी िीव श्वास िारा अपने कर्ों के प्रशतफल को भोगने हेतु सिा िीशवत रहते हैं। यह निी कचरे, र्ूत्र, पीब, रि, बाल, नाखूनों, ंअस्िों, ंर्ज्जा ओर र्ााँस और चबी से भरी रहती है।

िो र्नुष्य उच्च िाशत र्् िन्म लेते हैं और वेश्या स्त्री िो शक शनम्न िीवन क्रर्, शवषयी और शनलमज्जता पूणम िीवन शबताती है उसे अपनी पत्नी हेतु चुनाव करते हैं वे र्ृत्यु के पिात नकम के गड्ढे, पीब, कचरा, र्ूत्र, कफ के सागर र्् शगरते हैं और उन्् इन बहुत घृशणत वस्तुओं ंको शनगलना पड़ता है।

वे ब्राह्मण और अन्य िो कुशतया के, और गिों ंके स्वार्ी बनना पसंि करते हैं, िास्त्रों ंका उल्लंघन करके िानवरों ंका शिकार करना और उन्् र्ारना शिन्् शप्रय होता है र्ृत्यु के पिात क्रूर प्राशणयों ंके तीरों ंसे शनिाना बनाकर उन्् चुभाया िाता है।

वे र्नुष्य िो क्रूरतापूवमक पिुओं ंका वि करते हैं वे नकम र्् बशिक के घर िन्म लेते हैं और उनके साथ भी वैसा ही व्यवहार होता है। वे पापी िशि िो वासनाओं ंके विीभूत होकर सर्ान गोत्र वाली पत्नी लाते हैं उन्् अपना वीयम शपलाते हैं वे वीयम के सर्ुद्र र्् फेंके िाते हैं और इसे पीने के शलये शववि शकये िाते हैं।

िो िूसरों ंके घर र्् आग लगाते हैं िूसरों ंको शवष िेते हैं या गााँव और कारवााँ को लूटते हैं चाहे वे स्वयं रािा हों ंया रािा के कर्मचारी वे र्रणोपरांत ऐसे नकम र्् शगरते हैं िहााँ वे सात सौ बीस भूखे कुत्तों ंके भयंकर िााँतों ंिारा चबायें िाते हैं।

िो गवाही िेने या उपहार िेने र्् असत्य भाषण करते हैं वे अशवशचर्त नकम र्् शगरते हैं िहााँ खड़े होने का थथान भी नहीं ंहोता। वहााँ िीव चौिह हिार र्ील ऊाँचे शिखर से शसर के बल फेंक शिया िाता है। इस नकम र्् पत्थर िैसी कठोर सतह िल की तरह आभाशसत होती है इसशलये िीव सिा भ्रशर्त होता रहता है। उसका िरीर

टुक़्रि टुक़्रि कर शिया िाता है पर भी वह र्ता नहीं ंहै और वह बार-बार उठकर शिखर पर िाता है और बार-बार नीचे शगरता है।

यशि ब्राह्मण र्द्य पीता है या आपशत्तिनक भोज्य पिाथम ग्रहण करता है वह नकम र्ें शपघला लोहा पीने को शववि शकया िाता है। िो वणामश्रर् िर्म के शनयर्ों ंके शवरुि िाते हैं उनको भी ऐसा ही िंि शर्लता है।

िी व्यिस्ि स्वयं की श्रेष्ठ पुरुष के रूप र्ें प्रिंसा करता है शक िो िन्म, आिार और ज्ञान से हीन है उनका सिान नहीं ंकरते वे िीशवत िव हैं और वे अनंतयंत्रणा के खारे िलिल वाले नकम र्ें शसर आगे करके िाले िाते हैं।

िी चिररत्रहीन र्नुष्य अपने िरणागतों ंको यातना िेते हैं क्योंशंक वे उनके अिीन हैं वे र्ृत्यु के बाि अत्यंत भूख या प्यास से पीशित होने को बाध्य होते हैं और उनके चारों ंओर तीखे भालों ंकी बौछार होती रहती है शिससे वे अपने पापों ंको स्मरण करते रहें।

िी यहााँ पर स्वभाव से सपम की भााँशत क्रूर होते हैं और अन्य प्राशणयों ंको आतंशकत वे िब र्रते हैं िंिसुक नकम र्ें शगरते हैं िहााँ पााँच या सात फनों ंवाले सपम उन पर आक्रर्ण करते हैं और उन्हें र्ृत्यु से भय शिखाते हैं शंकतु शफर भी वे नहीं ंर्रते ।

िी यहााँ लोगों ंको अंिेरे घरों ंया काल-कोठरी र्ें रखते हैं वे र्रणोपरांत अशि और िंुए से भरे अंिकारपूणम वातावरण र्ें कैि रहते हैं।

वे गृहथथ िो अपने अशतशथयों ंसे क्रोशित होते हैं और उन्हें शनर्मर् आाँखों ंसे ऐसे िेखते हैं िैसे वे उन्हें िला िालेंगे उनकी र्ृत्यु के उपरांत कठोर चट्टानों ंकी तरह कठोर चोंचं वाली चीलों ंिारा उनकी आाँखें नोच ली िाती हैं।